

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भारतीय सिनेमा का योगदान

मनीष कुमार गुप्ता

(शोध छात्र, मीडिया अध्ययन विभाग,
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार)

डॉ सुनील दीपक घोड़के

(असिस्टेंट प्रोफेसर, मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार)

सारांश

किसी भी भाषा का सिनेमा उस भाषा के समाज एवं संस्कृति की महत्वपूर्ण प्रस्तुति होती है। साहित्य की भाँति उसे भी समाज का दर्पण कहा जाता है जिसमें यथार्थ, कल्पना, और कला का संगम होता है। साहित्य में यह कार्य शब्द करते हैं जबकि सिनेमा में बोलती हुई तस्वीरें करती हैं। इसीलिए साहित्य की अपेक्षा सिनेमा लोगों में अधिक लोकप्रिय है। जब दर्शक फिल्म देखता है तो उसके कुछेक संवाद वर्षों तक उसके जुबान पर होती है। सिनेमा संचार का एक सशक्त माध्यम है, परिवर्तन का सांस्कृतिक संवाहक है एवं इतिहास का एक अच्छा स्रोत है। जब बात हिंदी सिनेमा की होती है तो हमारे मन में एक ऐसी तस्वीर उभरती है जिसने सभी भाषा क्षेत्रों व सीमाओं को तोड़ते हुए हिंदी को जन सुलभ और लोकप्रिय भाषा के पद पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय सिनेमा जगत की पहली सवाक फिल्म 'आलमआरा' की भाषा भी हिंदी ही थी। 'आलमआरा' से आरंभ हुई इस यात्रा ने 'हिंदी मीडियम' तक आते-आते अनेकों पड़ाव पार किये हैं। बॉलीवुड ने हिंदी को कभी विषय वस्तु के रूप में चुना तो कभी भाषिक माध्यम के रूप में अपनाया। सत्तर-अस्सी के दशक में 'चुपके-चुपके' फिल्म ने जनमानस के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित किया कि यदि हम हिंदी भाषा की शास्त्रीयता को ही महत्व देते रहे तो वह एक दिन "जनसामान्य की भाषा" की पदवी खो देगी। इस सदी की बनी हुई टेलीविजन सीरियल जैसे रामानंद सागर निर्मित 'रामायण', बी. आर. चोपड़ा निर्मित 'महाभारत', एवं चंद्रप्रकाश द्विवेदी द्वारा निर्मित 'चाणक्य' ने हिंदी भाषा के महत्व और समाज में आज भी उसके महत्वपूर्ण स्थान की विषय वस्तु को लेकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान परिदृश्य में हिंदी सिनेमा जितनी लोकप्रिय हैं शायद ही किसी अन्य भाषा की फिल्में होंगी। आज विश्व में बनने वाली हर चौथी फिल्म हिंदी होती है। भारत में निर्मित होने वाली 60 प्रतिशत फिल्में हिंदी भाषा में बनती हैं, एवं वे ही सबसे अधिक चलन में होती हैं। जिस उत्साह से वह उत्तर भारत में देखी जाती है उतनी ही उत्साह से दक्षिण भारत में भी दिखाई जाती हैं। हिंदी फिल्में भारत के साथ-साथ विदेशों में भी देखी एवं पसंद की जाती हैं, इन फिल्मों ने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी को प्रोत्साहित, प्रचारित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय सिनेमा के माध्यम से देश-विदेशों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की भूमिका का विश्लेषण है।

मुख्य शब्द : भाषा, हिंदी, सिनेमा, हिंदी सिनेमा, प्रचार-प्रसार

परिचय

भारतीय हिन्दी सिनेमा की यात्रा लगभग 110 वर्ष की हो गई है इस पूरे शतकीय दौर में न जाने कितने विषय आए और कितने विषय गए परन्तु माध्यम का भाषायी ताना-बाना हिन्दी भाषा के इर्द-गिर्द बना रहा है। आज हिन्दी भाषा विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, 'इथनोलोग' दिसम्बर 2022 के 25वें संस्करण के अनुसार विश्व की दस प्रमुख भाषाओं में (दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा) अंग्रेजी प्रथम, चीन की मंदारिन द्वितीय, भारत की हिन्दी तृतीय स्थान पर है हालांकि क्रमशः सातवें एवं दसवें स्थान पर भी भारतीय भाषा बंगाली एवं उर्दू ही हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा के प्रसार में बखूबी भूमिका अदा की है। वर्तमान वैश्विक तकनीक युग में संचार के नए माध्यम सोशल मीडिया, यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफॉर्म, टेलीविज़न के धारावाहिकों के मोबाइल संस्करण अर्थात् वेब धारावाहिकों आदि के तीव्र विकास ने इस प्रसार को और अत्यधिक गति दी है। हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल कहते हैं कि "भूमंडलीकरण ने भारतीय जीवन को गहराई में जाकर प्रभावित किया है लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हिंदी खत्म हो जाएगी और अंग्रेजी उसका स्थान ग्रहण कर लेगी। बाज़ार की संस्कृति से अब भारत के छोटे-बड़े शहर और गांव भी अछूते नहीं रहे, लेकिन महानगरों के जीवन को देखकर हिंदी के भविष्य को लेकर सवाल नहीं उठाए जाने चाहिए"। वो कहते हैं, "भारत की 54 फीसदी आबादी 25 साल से कम उम्र के नौजवानों की है और भूमंडलीकरण ने उसकी आकांक्षाएं और चिंताएं बदली हैं। सूचना और आभासी दुनिया की नागरिकता के धरातल पर ग्रामीण एवं शहरी युवा में ज़्यादा फर्क नहीं है। दोनों एक वर्चुअल वर्ल्ड में जी रहे हैं और रियल टाइम में चैट कर रहे हैं"।

कोई भी संचार माध्यम ऐसी भाषा को अपनाता है जिसे अधिक से अधिक लोग लिखते, बोलते तथा समझते हों। सिनेमा के दर्शक लगभग समाज के हर वर्ग से आते हैं। शिक्षित वर्ग के साथ ही अशिक्षित या कम पढ़ा-लिखा वर्ग भी सिनेमा के दर्शक दीर्घा में होता है। इसलिए फिल्मों के निर्माता-निर्देशक समाज के हर वर्ग के व्यक्तियों के भाषा का प्रयोग अपनी फिल्म में करते हैं। जिससे फिल्म देखने वाले सभी दर्शकों को फिल्म की भाषा अपनी ही भाषा लगे। फिल्म में हिन्दी भाषा को चुनना इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी सभी भारतीय भाषाओं में अधिक उर्जावान, सरल, सुबोध, सुगम तथा आम जनमानस से सहजता से जुड़ने वाली भाषा है। मीडिया उस भाषा को अपनाता है जो भाषा अल्प समय तथा अल्प प्रयास में अधिकतम दर्शकों से जोड़ती है। अर्थात् हिन्दी भाषा में वह गुण है जो इसको सर्वग्राह्य, जनसुलभ बनाती है।

जब हम भारत और विदेशों में गैर-हिंदी भाषी देशों में हिंदी को बढ़ावा देने में हिंदी सिनेमा की भूमिका की बात करते हैं, तो भारत के बाहर बसे भारतीय मूल की दूसरी और तीसरी पीढ़ी के लोगों के बीच हिंदी को लोकप्रिय बनाने में हिंदी फिल्मों के अभूतपूर्व योगदान को नाकारा नहीं जा सकता। बॉम्बे फिल्म उद्योग केवल दक्षिण एशियाई देशों तक ही सीमित नहीं है। हिंदी फिल्मों विशेष रूप से उनकी गीतें अफ्रीका, मध्य एशिया, मध्य-पूर्व एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरेशिया और कुछ हद तक पूर्वी यूरोप में भी बहुत लोकप्रिय हैं। संभवतः हिन्दी सिनेमा के प्रसार ने मनोरंजन के माध्यम से हिंदी भाषा को वैश्विक तौर पर पहचान दिलाई है। मशहूर शायर और गीतकार गुलज़ार ने 2007 में संयुक्त राज्य अमेरिका की आर्थिक राजधानी न्यूयॉर्क शहर में आयोजित हुए आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन के तहत 'हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दी फिल्मों की भूमिका' सत्र की अध्यक्षता करते हुए यह टिप्पणी

की थी कि "हिन्दी के प्रचार-प्रसार में फिल्मों ने साहित्य अकादमियों और नेशनल बुक ट्रस्ट से ज्यादा योगदान दिया है"।

भारत में हिंदी सिनेमा का प्रसार

भारत एक सांस्कृतिक बहुल एवं बहुभाषी राष्ट्र है। यहाँ लगभग साढ़े सोलह सौ भाषाएँ हैं, जिनमें बाईस को सांविधानिक मान्यता प्राप्त है एवं चौबीस भाषाएँ साहित्य अकादमी द्वारा अनुमन्य हैं। यह सही है की भारतीय इतिहास, भूगोल और संस्कृति में काफी विविधता है, किन्तु राष्ट्रवाणी में इस अनेकता में एकता का अन्तः सूत्र स्थापित करना असंभव नहीं है। भारतीय फिल्म उद्योग भी भारतीय संस्कृति की तरह विविध है। भारतीय फिल्म के अन्तर्गत भारत के विभिन्न भागों और भाषाओं में बनने वाली फिल्में आती हैं जिनमें मुख्यतः हिंदी, कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम, असमी, बांग्ला, गुजराती, मराठी, उड़िया, पंजाबी, कोंकणी, भोजपुरी, तुलू, बदागा, कोसली, कश्मीरी, राजस्थानी और गढ़वाली इत्यादि शामिल हैं। हिंदी भाषा की फिल्में इन सब में सबसे ज्यादा लोकप्रिय हैं। भारत में सिनेमा का परिचय 7 जुलाई 1896 को फ्रांस से आए लुमिअर बंधुओं ने मुंबई के वाट्सन होटल में 06 लघु फिल्मों का पैकेज "मैजिक लैम्प" का प्रदर्शन कर भारत की जनता से कराया था। जबकि भारत की पहली फीचर फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" 3 मई 1913 को भारतीय दर्शकों के सामने आयी थी। इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक थे मराठी भाषी धुंडीराज गोविंद फाल्के जिन्हें हम दादा साहेब फाल्के के नाम से जानते हैं और उन्हें भारतीय सिनेमा का पितामह कहते हैं। कुछ विद्वान भारत में फीचर फिल्म की शुरुआत "पुंडलिक" नामक फिल्म से मानते हैं, जिसका निर्माण 1912 में हुआ था।

सिनेमा भाषा के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है इसमें हर तरह के भाषा के लिए जगह है एवं पात्रों की भूमिका व परिस्थितियों को देखकर ही भाषा का प्रयोग किया जाता है। भारतीय सिनेमा का इतिहास देखा जाये तो आरम्भ से ही भारतीय सिनेमा कहानियों के लिए हिंदी की ओर रुख किया है। जब भारत में फिल्में बनना शुरू हुईं चाहे वो मूक ही थीं पर जिन कहानियों को लोगों ने बोलचाल की भाषा में हिंदी में पढ़ा था उन्हीं अधिकतर पौराणिक कथाओं (देवी-देवताओं, पुराणों एवं ग्रंथों के चरित्र) पर आधारित हुआ करती थीं। जैसे राजा हरिश्चंद्र, मोहिनी भस्मासुर, कालिया मर्दन और लंका दहन इत्यादि। ये फिल्में मूक थीं पर हिंदी भाषा को अपने में समाहित किये हुए उनका प्रचार कर रही थीं। भाषा दूर तक सफर करती है और लोगों को नजदीक लाती है। आजादी के शुरुआती दिनों में हिंदी सिनेमा पर दिलीप कुमार, देव आनंद और राजकपूर का स्टारडम उभर रहा था। वी शांताराम, गुरुदत्त, राजकपूर, विमल रॉय एवं बीआर चोपड़ा जैसे फिल्मकार सामाजिक प्रतिबद्धता वाली फिल्में बना रहे थे। उस दौर में लोगों को जागरूक करने का सिनेमा बेहतरीन माध्यम था। पचास, साठ और सत्तर के दशक को हम हिंदी का स्वर्णिम काल मान सकते हैं। जब भले ही तकनीकी रूप से फिल्में कमजोर थीं लेकिन संवाद, कथानक, अभिनय, और गीत-संगीत का स्तर उच्चतम था जिसकी भाषा हिंदी थी। फिल्मों के ब्यवसायिक संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए हिंदी के बहुतायत दर्शक वर्ग तक पहुंचने हेतु हिंदी भाषा से बेहतर कोई दूसरा विकल्प नहीं था। शायद इसीलिए आर्देशिर ईरानी ने भारत की पहली सवाक फिल्म 'आलमआरा' की भाषा उर्दू

मिश्रित हिंदी आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। 1931 में जो सताईस फिल्में बनी थीं इनमें से बाईस तो हिंदी में ही थीं।

यदि भाषाई आधार पर देखा जाये तो भारतीय सिनेमा में हिंदी भाषा के अलावा अन्यत्र भाषाओं में भी सिनेमा बहुतायत मात्रा में बनीं पर हिंदी की लोकप्रियता इन सभी में सबसे ऊपर रहा। आज हिंदी में बहुत सी ऐसी फिल्में, टेलीविज़न सीरीज, वेब सीरीज बनती हैं जिनमें प्रचुर मात्रा में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग होता है, जो हिंदी भाषा को रोचक एवं लोगों से जोड़ने वाली बनाती है। जैसे फिल्म गैंग ऑफ वासेपुर, पानसिंह तोमर, वेब सीरीज मिर्ज़ापुर, पंचायत, टेलीविज़न सीरीज निमकी मुखिया इत्यादि। आज हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा ही नहीं लोगों के जीवन शैली, भावात्मक संचार एवं वैचारिक प्रतिबद्धता आदि को भी दर्शाती है।

वर्तमान परिदृश्य में भारत के अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के तुलना में हिंदी फिल्में ज्यादा लोकप्रिय हैं। ऐसा नहीं है की क्षेत्रीय भाषा की फिल्में चलती नहीं हैं, वे अपने भाषा में अपने राज्य तक ही सीमित होते हैं जैसे तेलगु फिल्म आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में, तमिल तमिलनाडु में, मराठी महाराष्ट्र में, असमी असम में, बंगाली पश्चिम बंगाल में और मलयालम केरल में ही चलती हैं। परन्तु अब ट्रेंड बदल चूका है इन फिल्मों के हिंदी संस्करण का पुरे भारत में मांग है इन क्षेत्रीय भाषाओं के फिल्मों का हिंदी रूपांतरण पुरे देश में प्रसारित की जा रही हैं। जैसे कुछ लोकप्रिय फिल्में बाहुबली, केजीएफ, मगधीरा, कांतारा, पुष्पा इत्यादि को हिंदी भाषा में पुरे देश में प्रसारित किया गया। इसका एक कारण यह भी है की हिंदी हमारी भाषा संपर्क है, कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिंदी लिखने, पढ़ने एवं बोलने वाले लोग बहुतायत मात्रा में मिल जायेंगे। इसी प्रकार पुरे देश में हिंदी फिल्मों के दर्शक और प्रशंसक भी मिल जायेंगे। कुछ हद तक दक्षिण में हिंदी का विरोध किया जाता रहा है, पर हिंदी फिल्में लोकप्रिय हैं। खासकर तमिलनाडु में समय-समय पर हिंदी का विरोध किया जाता रहा है परन्तु इसी तमिलनाडु के तीन शहर मदुरै, चेन्नई और कोयंबटूर में हिंदी फिल्म 'शोले' वर्षों तक दिखाई गयी थी। 'शोले' के अलावा 'हम आपके हैं कौन', 'दिलवाले दुल्हनियां ले जायेंगे', 'बॉर्डर', 'दिल तो पागल है', 'ग़दर-एक प्रेम कथा' और 'लगान' इत्यादि कितनी ही फिल्में सम्पूर्ण भारत में पुरे जोश के साथ प्रसारित की जाती रही हैं।

हिंदी सिनेमा में अहिन्दी भाषा कलाकारों के योगदान के कारण भी हिंदी को अहिन्दी भाषी राज्यों में हमेशा से बढ़ावा मिला है। दक्षिण के रजनीकांत, कमल हासन, पद्मिनी, सुब्बालक्ष्मी, बाला सुब्रमण्यम, वैजयंती माला, रेखा, श्रीदेवी, हेमामालिनी, चिरंजीवी, और ए. आर. रहमान इत्यादि जैसे सितारे हिंदी फिल्मों में काफी लोकप्रिय हैं। बंगाल की कई हस्तियां जिनमें प्रमुख रूप से सत्यजीत रे, विमल रॉय, मन्ना डे, आर.सी. बोराल, शर्मिला टैगोर, पंकज मलिक, हेमंत कुमार आदि ने हिंदी को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है एवं हिंदी भाषी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय हैं। वहीं प्रसिद्ध अभिनेता डैनी डेङ्गोम्पा अहिन्दी राज्य सिक्किम से हैं तो हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध संगीतकार सचिन देवबर्मन, एवं राहुल देवबर्मन मणिपुर राजघराने से सम्बंधित हैं।

विदेशों में हिंदी सिनेमा का प्रसार

भाषा का प्रसार अपने प्रयोक्ता-समूह की संस्कृति और सामाजिक प्रश्नों को साथ लेकर चलता है। यह कहने में कोई गुरेज नहीं की भारतीय सिनेमा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी विश्वव्यापी भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

जब हम भारतीय सिनेमा पर दृष्टिपात करते हैं तो भाषा का प्रचार-प्रसार, साहित्यिक कृतियों का फिल्मी रूपांतरण, हिंदी गीतों की लोकप्रियता, हिन्दी की उपभाषाओं, बोलियों का सिनेमा और सांस्कृतिक, सामाजिक प्रश्नों को उभारने में भारतीय सिनेमा का योगदान जैसे मुद्दे उभरकर सामने आते हैं। हिन्दी भाषा की संचारात्मकता, शैली, वैज्ञानिक अध्ययन, जन संप्रेषणीयता, पटकथा, संवाद, दृश्य भाषा कोड निर्माण, संक्षिप्त कथन, प्रतीकात्मकता, भाषा-दृश्य की अनुपातिकता आदि मानकों को भारतीय सिनेमा ने गढ़ा है। भारतीय सिनेमा हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर दुनिया तक पहुँचने की दिशा में अग्रसर है। आज भारत दुनिया को हिंदी के उत्कृष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से रातों-रात करोड़ों नए दर्शक दे रहा है। स्वतंत्र बाज़ार और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में एक बात अवश्य है कि हिंदी भाषा बाज़ार और मुनाफ़े की कुंजी बन रही है वहीं दूसरी ओर मिलीजुली हिन्दी जिसे हिंगलिश कहना ज्यादा उचित होगा का भी प्रसार बहुतायत में हो रहा है जो की मूल भाषा के लिए घातक साबित हो सकता है। साहित्यकार डॉ राजू पांडेय लिखते हैं - “कई बार ऐसा भी लगता है की हिंदी भाषा का तद्विचरण एक सहज उद्दम प्रवाह है और सजग तत्समीकरण इस प्रवाह के प्रभाव को नियंत्रित नियमित व्यवस्थित करने की एक समानांतर चेष्टा आवश्यक है”। रूसी विद्वान डॉ पीटर बारानिकोव मानते हैं कि “हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा ने जितना योगदान दिया है उतना और किसी माध्यम ने नहीं दिया है”। अमरिका के राष्ट्रपति ओबामा ने अमेरिकी नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा था कि “वे जितनी जल्दी हो सके हिन्दी सीखें, अन्यथा सारे कामकाज हिन्दुस्तानी हथिया लेंगे”। आज हॉलीवुड के फिल्म निर्माता भी बखूबी समझ चुके हैं की अगर उनकी फिल्में हिंदी में रूपांतरित की जाएँ तो ज्यादा लाभ अर्जित किया जा सकता है इसलिए उन्होंने अपनी विपणन नीति में ब्यापक बदलाव लाया है। हॉलीवुड की आज की वैश्विक बाज़ार की परिभाषा में हिंदी जानने वालों का महत्व सहसा बढ़ गया है। दुनिया भर में आर्थिक सुधारों व उदारीकरण के दौर में निजी पहल का चमत्कार अभूतपूर्व रहा है। इसने भारतीय सिनेमा के माध्यम से हिंदी को दुनिया के दूर-दराज के एक बड़े भू-भाग में समझी जाने वाली भाषा स्वतः बना दिया है। पूर्व सोवियत संघ और उसके सहयोगी देशों जैसे पोलैंड, हंगरी, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया आदि में हिंदी फिल्मों के लंबे समय से प्रशंसक रहे हैं। रूस के पूर्व राष्ट्रपति बोरिस येल्टसिन का तो पसंदीदा गाना ही था- आवारा हूँ...! राजकपूर साहब द्वारा अभिनीत मेरा जूता है जापानी...! गाने नें मानो हिन्दी गीत के वैश्विक आधार और ग्राह्यता की नींव रख दी थी। 'आवारा हूँ...!' 1951 में रिलीज़ राजकपूर के मशहूर फिल्म 'आवारा' का गीत उस दौर में रूस, रोमानिया, तुर्की, अफगानिस्तान और चीन में काफी प्रसिद्ध हुआ था। 1953 में कान फिल्मोत्सव के ग्रेंड प्राइज़ के लिए भी यह फिल्म नामांकित हुई और विदेशी लोगों ने इसकी काफी सराहना की थी। तत्पश्चात हिंदी सिनेमा का सफर कभी रुका नहीं बल्कि विदेशों में नए रास्ते बनते गए। वर्ष 1957 में आयी महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'मदर इंडिया' जिसको विदेशी भाषा की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के तौर पर ऑस्कर हेतु नामांकित किया गया तब वैश्विक स्तर पर हिंदी सिनेमा को गंभीरता से देखा, समझा जाने लगा। राज्यसभा के पूर्व सदस्य आरके सिन्हा जी लिखते हैं- “यह बात सच है कि जापान में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के चलते भारत को जानने-समझने की जिज्ञासा रही है। वहां पर गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगौर भी कई बार गए। टोक्यो यूनिवर्सिटी में हिंदी का अध्यापन साल 1908 से चालू हो गया था। अब कुछेक सालों से वहां पर हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता भी बढ़ती जा रही है। वहां तो हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन करके भी हिंदी सिखायी जाती है। विश्व के करीब 192 देशों में हिन्दी न केवल पढाई जा रही है, बल्कि शान से बोली भी जा रही है। इस व्यापकता के पीछे अन्य कारकों के अलावा सिनेमा

भी एक कारक है, जिसके माध्यम से हिन्दी विश्व में निरंतर प्रचारित हो रही है। एक था टाइगर, धूम टू, श्री इंडियट्स और इंग्लिश विंग्लिश जैसी हिंदी फिल्मों को जापानी जनता ने खूब सराहा है उन्हें अपार सफलता मिली।

भारतीय फिल्मों का अनुकरण पूरे दक्षिणी एशिया, ग्रेटर मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्व सोवियत संघ में भी होता है। अप्रवासी भारतीयों की विदेशों में बढ़ती जनसंख्या की वजह से अब संयुक्त राज्य अमरीका और यूनाइटेड किंगडम भी भारतीय फिल्मों के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बन गए हैं। यही कारण है की वर्तमान में रिलीज होने वाली फिल्मों के प्रदर्शन के अधिकार भारत व विदेशों में समान रूप से विक्रय किए जाते हैं। वर्तमान में शत प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रावधान से 20वीं सेंचुरी, फॉक्स, सोनी पिक्चर्स, वॉल्ट डिज्नी पिक्चर्स और वार्नर ब्रदर्स आदि विदेशी उद्यमों के लिए भारतीय फिल्म बाजार को आकर्षक बना दिया है। एवीएम प्रोडक्शंस, प्रसाद समूह, सन पिक्चर्स, पीवीआर सिनेमा, जी टीवी, यूटीवी, सुरेश प्रोडक्शंस, इरोज फिल्मस, अयनगर्न इंटरनेशनल, पिरामिड साइमिरा, आस्कर फिल्मस, यशराज फिल्मस, धर्मा प्रोडक्शंस और एडलैब्स आदि भारतीय उद्यमों ने भी फिल्म उत्पादन और वितरण में सफलता पाई है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिनेमा, मीडिया और हिन्दी का रिश्ता बहुत पुराना है। जैसे हिन्दी हिन्दुस्तान की जान है, वैसे ही हिन्दुस्तान में हिन्दी के बगैर सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा और मीडिया का योगदान बहुत ही अतुल्य रहा है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में सिनेमा और मीडिया ने हिन्दी को जीवनदान दिया है। आज आप भारत के किसी भी कोने में पहुँच जाएँ वे हिन्दी इसलिए समझ पाते हैं कि उन्होंने उसे फिल्मों अथवा अन्य मनोरंजन के माध्यम से देखा व सुना है। आज विदेशियों को यदि अपना प्रचार करना होता है, चाहे वह सिनेमा का हो चाहे उनके उद्योग का हो, उन्हें हमारी राजभाषा हिन्दी का सहारा लेना ही पड़ता है, क्योंकि अधिकतर लोग सहज, सरल व सुबोध हिन्दी भाषा को जानते, समझते और बोलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत से बाहर हिंदी फिल्मों को देखने के प्रति भारतवंशी ही लालायित नहीं रहते वरन अन्य भाषा-भाषी भी इनके गीतों को गुनगुनाते नजर आते हैं। इनको लेकर पूर्व सोवियत संघ (अब रूस) से लेकर खाड़ी के देशों, अफ्रीका से लेकर दक्षिण-पूर्व एशियाई समेत तमाम अन्य देशों में अभूतपूर्व दिलचस्पी है।

सन्दर्भ सूची

- Rajani, (2021). हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान. *International Journal of Applied Research*, 7(6), 315-318
- Eberhard, David M., Gary F. Simons, and Charles D. Fennig (eds.). 2022. *Ethnologue: Languages of the World*. Twenty-fifth edition. Dallas, Texas: SIL International. Online version: <http://www.ethnologue.com>.
- Sinha, R.K., (2015 Sep 21). "Movies make Hindi popular". The Daily Star. <https://www.thedailystar.net/showbiz/cinema-makes-hindi-popular-146557>.
- बाजपेयी, डॉ. काजल, "भारतीय सिनेमा में हिंदी की स्थिति". साहित्य शिल्पी. https://www.sahityashilpi.com/2010/10/blog-post_29.html.
- अनूप, अनिल, (2018 Feb 23) "हिन्दी सिनेमा के बीते पल". पंजाब केसरी. <https://www.punjabkesari.in/aapki-kalam-se/news/moments-of-hindi-cinema-758951>.
- Anwar, Shakeel (2018 July 19), "भारत की विभिन्न भाषाओं की पहली फिल्म". Jagran Josh. <https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/first-film-of-different-languages-of-india-in-hindi-1531995844-2>.
- ताम्रकर, समय, (2022 Aug 23). "आजादी के बाद का 75 वर्षीय हिंदी सिनेमा: सिनेमा था सिनेमा है और सिनेमा रहेगा". Webdunia. https://hindi.webdunia.com/bollywood-focus/indian-cinema-after-independence-a-journey-of-75-years-122081300060_1.html
- कर्पे, दीपक भालचंद्र, " हिंदी की लोकप्रियता में सिनेमा का योगदान". Webdunia. https://hindi.webdunia.com/hindi-diwas-special/hindi-language-and-bollywood-116091100031_1.html
- शालिनी, शिखा, (2010 September 14), "भारतवंशियों को हिंदी से जोड़ता हिंदी सिनेमा". बिज़नेस स्टैंडर्ड. <https://hindi.business-standard.com/storypage.php?autono=39019>
- द्विवेदी, अमरेश, (2012 September 12), "ग्लोबल गांव में हिंदी". बीबीसी हिंदी. https://www.bbc.com/hindi/india/2012/09/120912_globalisation_hindi_akd
- Siegel, Joshua A., (2015 September 2), "Visual Language: Using Language as Cinematic Structure". Videomaker. <https://www.videomaker.com/article/c18/18140-visual-language-using-language-as-cinematic-structure/>
- पांडेय, शैलेश, (2022 Jan 09), "हिंदी सिनेमा में हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप". साहित्य सिनेमा सेतु <https://sahityacinemasetu.com/article-hindi-cinema-mein-hindi-bhasha-ka-badalta-swarup/>